गोलालारीय समाज का मुखपत्र

श्री गोलालारीय दिगम्बर जैन समाज न्यास इन्दौर

golalariya.darshan@gmail.com

गोलालारीय दर्शन यहां भी देख सकते है -
www.golalariya.com
94074-53066

मासिक

गोलालारीय दर्शन

सफलता के 13 वर्ष

लेट पोस्टिंग

अपनों के साथ अपनी बातें

RNI No. MPHIN/2008/26873
No. MP/IDC/1252/2021-2023

सेवा में,

पंचकल्याणक विशेषांक

जो भरा नहीं है भावों से, बहती जिसमें रसधार नहीं । हृदय नहीं वह पत्थर है, जिसको समाज से प्यार नहीं ।

वर्ष : 14 अंक : 6 पृष्ठ संख्या : 10 माह - 20 अप्रैल 2023 सहयोग राशी 1100/- देकर सदस्य बनें ।

गोलालारीय समाज इन्दौर का प्रथम ऐतिहासिक पंचकल्याणक साआनंद संपन्न

अनुपमा जैन, इन्दौर । अभूतपूर्व अनुभव......नयनाभिराम दृश्य अंततः इन्दौर गोलालारीय समाज जनों की चिर प्रतीक्षित घड़ियां आ ही गई जब कुमेड़ी स्थित श्री 1008 आदिनाथ जिनालय के अद्वितीय सुसंस्कार पंचकल्याणक महामहोत्सव की मंगल भेरी बज उठी। वह शुभ तिथि थी 8 मार्च से 14 मार्च 2023 और वह पुण्य धरा थी प्रारम गार्डन । यह वही अतिशयकारी पुण्य भूमि थी जहां कोरोना काल में आचार्य भगवान श्री विद्यासागरजी महाराज का प्रवास हुआ था। उनकी चरण रज से इस पुण्य भूमि का भाग्योदय हुआ और पंचकल्याणक का स्थान यहीं निश्चित हुआ । भव्य जिनालय में विराजमान होने वाली तीर्थंकर प्रतिमाओं के भव्यातिभव्य पंचकल्याणक महोत्सव के सूत्रधार बने आचार्य श्री 108 विद्यासागरजी महाराज के परम प्रभावक शिष्य मुनि श्री 108 विमलसागरजी महाराज, मुनिश्री 108 अनंतसागरजी महाराज, मुनिश्री 108 धर्मसागरजी महाराज व मुनिश्री 108 भावसागरजी महाराज। इनके पावन सानिध्य में इन्दौर गोलालारीय समाज के इतिहास का सबसे भव्य पंच कल्याणक संपन्न हुआ।

इस भव्य पंचकल्याणक के उल्लास दिवस 8 मार्च को प्रातः9 बजे विशाल घटयात्रा निकाली गई। इसमें आसपास स्थित विभिन्न कॉलोनी जैसे विजयनगर, सुखलिया, क्लर्क कॉलोनी, परदेशीपुरा, नंदा नगर , महालक्ष्मी नगर आदि से समाज की महिलाएं एकत्रित हुई और अपने मस्तक पर कलश लेकर नवनिर्मित जिनालय से पंचकल्याणक प्रतिष्ठा स्थल तक शोभायात्रा के रुप में गाजे-बाजे के साथ, भजनों पर नृत्य करते हुए पहुंची। कलशों के प्रासुक जल से पंचकल्याणक प्रतिष्ठाचार्य बाल ब्रह्मचारी श्री विनय भैयाजी 'बंडा' द्वारा मंत्रोच्चार के द्वारा मंडप शुद्धि और पांडाल शुद्धि कराई गई।

द्वितीय दिवस बीजारोहण 9 मार्च से पंचकल्याणक की विधिवत क्रियाएं आरंभ हुई, जिनमें इंद्रों और विशिष्ट पात्रों द्वारा श्री जी के अभिषेक, शांतिधारा, नित्य नियम पूजन की क्रियाएं की गई। डॉ. रुपेश मोदी और उनके परिवार द्वारा ध्वजारोहण करते ही मंगल वाद्यों के साथ पंचकल्याणक का शुभारंभ हुआ । डॉ. रुपेश मोदी इस जिनालय के भूमि पूजनकर्ता रहे । दोपहर में विनय भैयाजी के निर्देशन में इंद्र-इंद्राणियों ने यागमंडल विधान किया। प्रतिदिन प्रातःकाल और मध्यान्ह में पूज्य गुरुवर श्री विमलसागरजी ससंघ के आशीर्वचन प्राप्त होते थे। 7 बजे संध्या महाआरती, 8 बजे सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रारंभ हुये । भोपाल से पधारे सचिन जैन की आर्केस्ट्रा ने संगीत का समा बांधा। इसके पश्चात रात 9 बजे इंद्र सभा में प्रभु के गर्भ कल्याणक की घोषणा हुई। धनपति कुबेर (श्री गौरव-पारुल शाह) ने रत्नवृष्टि की ।

10 मार्च सत्यावतरण दिवस पर इंद्र-इंद्राणियो ने गर्भ कल्याणक की पूजन व विधान में सम्मिलित होकर धर्म लाभ लिया। शाम को भगवान के गर्भ कल्याणक का मंचन हुआ । महाराजा नाभिराय का दरबार सजा, जिसमें मरुदेवी माता (श्रीमती प्रभा-रमेशचंद जैन) के 16 सपनों का वर्णन और महाराज द्वारा उनका समाधान दिया गया।

11 मार्च सत्योद्घाटन दिवस पर जन्म कल्याणक में दुंदुभी वाद्य के साथ भगवान के जन्म की घोषणा की गई। सौधर्म इंद्र और शचि इंद्राणी (श्री प्रयंक-शालिनी जैन) बालक को ऐरावत हाथी पर बैठाकर गाजे बाजे के साथ शोभायात्रा सहित पाण्डुक शिला पर ले गये, जहां जन्माभिषेक की क्रियाएं संपन्न हुई। शाम को प्रभु की बाल क्रीड़ा का मंचन किया गया।

12 मार्च (रंग पंचमी) तप कल्याणक - सत्य तथ्य की ओर प्रस्थान दिवस पर आदिकुमार का विवाह, राज्याभिषेक और राज काज का संचालन दिखाया गया। प्रजा के हित में असी, मसी और कृषि की शिक्षा, ब्राह्मी और सुंदरी पुत्रियों को भाषा और गणित विद्या का शिक्षण बहुत मर्मस्पर्शी था। इसके पश्चात नीलांजना नृत्य और आदिकुमार का वैराग्य लेकर दीक्षा लेना, प्रभु की पालकी उठाने के लिए देवताओं और मनुष्यों के बीच विचार वैषम्य का मंचन भी वैराग्य को जगाने वाला था। मुनि श्री के कर कमलों द्वारा भगवान की मुनि दीक्षा व संस्कार देखने का परम सौभाग्य मिला।

13 मार्च ज्ञान कल्याणक - सत्य तथ्योपलब्धि दिवस पर 108 श्री आदिसागर महाराज ने मुनि दीक्षा के उपरांत छह माह की तपस्या तथा 6 माह के पड़गाहन के उपरांत राजा सोम (इंजी. आनंद-कल्पना जैन) व राजा श्रेयांश (श्री अशोक-शोभा जैन) के द्वारा इक्षु रस के रुप में आहार ग्रहण किया। इसी दिन भगवान के समवशरण की सुंदर रचना प्रदर्शित की गई। मुनि श्री ससंघ समवशरण में विराजमान हुए

शेष... पृष्ठ 2 पर...

आचार्य श्री के सानिध्य में अमर कंटक पंचकल्याणक साआनंद संपन्न

श्रेय स्वतंत्र जैन, अनूपपुर । नर्मदा व सोन जैसी पवित्र नदियों के उद्गम स्थल अमरकंटक की वादियों में बने विशाल सर्वोदयतीर्थ एवं सहस्त्र कूट जिनालय में विराजमान होने वाली 1008 अरिहंत परमेष्ठी मूर्तियों के भव्य पंचकल्याणक महोत्सव आचार्य श्री 108 विद्यासागरजी महाराज, पूज्य निर्यापक श्रमण मुनि श्री प्रसादसागरजी महाराज, मुनि श्री चंद्रप्रभु सागरजी महाराज व मुनि श्री निर्भगसागरजी महाराज के पावन सानिध्य में 25 मार्च से 1 अप्रैल तक संपन्न हुआ । इसके पश्चात 2 अप्रैल रविवार को बड़े बाबा का महामस्तकाभिषेक बड़े ही धूमधाम व हर्षोल्लास से संपन्न हुआ ।

इस भव्य पंचकल्याणक के प्रथम दिन शनिवार को दोपहर एक बजे विशाल घटयात्रा निकाली गई इसके पश्चात 3 बजे जैन समाज के दानवीर आरके मार्बल ग्रुप के अशोक पाटनी जी व बिलासपुर के विख्यात कोयला परिवार द्वारा मुनि श्री के पावन सानिध्य व पंचकल्याणक प्रतिष्ठाचार्य श्री विनय भैयाजी बंडा के निर्देशन में ध्वजारोहण व मंडप शुद्धि की गई, 7 बजे संध्या महाआरती, 8 बजे सांस्कृतिक कार्यकम व रात 9 बजे इंद्राणियों को आगामी धार्मिक अनुष्ठान के विधि कियायों और संयम के आचरण का प्रशिक्षण, अभ्यास प्रतिष्ठाचार्य बाल ब्रह्मचारी विनय भैया के निर्देशन में हुआ।

सर्वोदय तीर्थ अमरकंटक का यह सहस्त्र कूट जिनालय भारतवर्ष का प्रथम सहस्त्र कूट जिनालय है जो पूर्ण रूप से पत्थरों से निर्मित तथा जहां सभी अरिहंत परमेष्ठी की प्रतिमाएं विराजमान है । इस भव्य सहस्त्र कूट जिनालय से संपूर्ण अमरकंटक का दृश्य अपने आप में एक अनोखा अविस्मरणीय अनुभव है।

पंचकल्याणक महोत्सव में 1008 इंद्र इंद्राणियो ने पूजन पाठ व विधान में सम्मिलित होकर धर्म लाभ लिया इसमें भगवान के गर्भ कल्याणक जिसमें माता के 16 सपनों का वर्णन दिया गया । इसके पश्चात जन्म कल्याणक में भगवान के जन्म के पश्चात उनका जन्म अभिषेक तथा शाम में बाल क्रीड़ा का वर्णन किया गया। शाम में महाआरती व शास्त्र प्रवचन के पश्चात सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया इसके तत्पश्चात तप कल्याणक के दिन आचार्य श्री के कर

शेष... पृष्ठ 2 पर...